विद्या ददाति विनयम्

संजीव®

सरसा पाठशाला

हिंदी साहित्य

का सरल एवं सुबोध इतिहास

सहायक आचार्य, स्कूल व्याख्याता एवं वरिष्ठ अध्यापक

के लिए समान रूप से उपयोगी हिंदी के लिए श्रेष्ठ पुस्तक

UGC, NET, TGT, PGT के लिए भी समान रूप से बेहद उपयोगी पुस्तक

लेखक

कैलाश नागौरी

(सरसा पाठशाला ऐप)

वॉट्सऐप- 9660669988

पुष्प सिंह चारण

संपादक

डॉ. दीपेश कुमार सैनी

संजीव प्रकाशन, जयपुर

- **प्रकाशक :**
  संजीव प्रकाशन
  धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता,
  जयपुर-03
  website : www.sanjivprakashan.com

- **© किरण** (सरसा पब्लिकेशन)
- **संस्करण- 2025**
- **मूल्य :** 460.00
- **लेजर कम्पोजिंग :**
  संजीव प्रकाशन (D.T.P. Department), जयपुर
- **मुद्रक :** मनोहर आर्ट प्रिन्टर्स, जयपुर

- ❑ इस पुस्तक में त्रुटियों को दूर करने के लिए हर संभव प्रयास किया गया है। किसी भी त्रुटि के पाये जाने पर अथवा किसी भी तरह के सुझाव के लिए आप हमें निम्न पते पर email या पत्र भेजकर सूचित कर सकते हैं-
  Email : sanjeevcompetition@gmail.com
  पता : प्रकाशन विभाग, संजीव प्रकाशन
  धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता, जयपुर
  आपके द्वारा भेजे गये सुझावों से अगला संस्करण और बेहतर हो सकेगा।
- ❑ इस पुस्तक के किसी भी अंश का पुनरुत्पादन या किसी प्रणाली के सहारे पुनर्प्राप्ति का प्रयास अथवा किसी भी तकनीक या तरीके-इलेक्ट्रोनिक, मैकेनिकल, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या वेब माध्यम से प्रकाशक की अनुमति के बिना प्रकाशन या वितरण नहीं किया जा सकता है।
- ❑ हमने अपने प्रयास से इस पुस्तक के तथ्यों तथा विवरणों को उचित स्रोतों से प्राप्त किया है। इस पुस्तक में प्रकाशित किसी भी सूचना की सत्यता या त्रुटि के प्रति तथा इससे होने वाली किसी भी क्षति के लिए लेखक, प्रकाशक, संपादक तथा मुद्रक किसी भी रूप में जिम्मेदार नहीं हैं।
- ❑ सभी प्रकार के प्रतिवादों का न्यायिक क्षेत्र 'जयपुर' होगा।

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	अध्याय का नाम	पृष्ठ संख्या
अध्याय-1	**हिंदी साहित्य-इतिहास लेखन**	**5-15**
1.	इतिहास लेखन की परंपरा एवं विधियाँ	5
2.	प्रमुख इतिहास ग्रंथ एवं इतिहासकार	7
3.	हिंदी साहित्य : आरंभ, काल-विभाजन और नामकरण	12
अध्याय-2	**हिंदी साहित्य का विस्तार**	**16-28**
1.	हिंदी भाषा: उद्भव एवं विकास	16
2.	हिंदी प्रदेश उपभाषाएँ, बोलियाँ एवं उनका साहित्यिक योगदान	21
3.	देवनागरी लिपि का विकास	26
अध्याय-3	**हिंदी साहित्य का आदिकाल**	**29-49**
1.	आदिकाल- सामाजिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, प्रमुख प्रवृत्तियाँ, रचनाओं की प्रमाणिकता एवं नामकरण	29
2.	सिद्ध साहित्य	31
3.	नाथ साहित्य	35
4.	जैन साहित्य	38
5.	रासो साहित्य	42
6.	लौकिक साहित्य	46
7.	गद्य साहित्य	46
8.	आदिकाल की अन्य महत्त्वपूर्ण रचनाएँ	47
अध्याय-4	**हिंदी साहित्य-भक्तिकाल**	**50-82**
1.	भक्तिकाल-सामान्य परिचय, भक्ति का उद्भव, विकास एवं दार्शनिक पृष्ठभूमि	50
2.	भक्तिकालीन निगुर्ण ज्ञानमार्गी काव्यधारा	53
3.	भक्तिकालीन निर्गुण प्रेममार्गी काव्यधारा	59
4.	भक्तिकालीन रामभक्ति काव्यधारा	66
5.	भक्तिकालीन कृष्णभक्ति काव्यधारा	72
6.	भक्तिकालीन अन्य काव्य रचनाएँ	82
अध्याय-5	**हिंदी साहित्य-रीतिकाल**	**83-113**
1.	रीतिकाल- रीति से तात्पर्य, सामाजिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, रीतिकालीन साहित्य की स्रोत सामग्री एवं नामकरण	83
2.	रीतिबद्ध काव्य- प्रमुख रचनाकार	95
3.	रीतिसिद्ध काव्य- प्रमुख रचनाकार	105
4.	रीतिमुक्त काव्य- प्रमुख रचनाकार	109
5.	रीतिकाल का इतर काव्य	111
अध्याय-6	**हिंदी साहित्य-आधुनिककाल**	**114-132**
1.	आधुनिककाल- पूर्व पीठिका-तत्कालीन परिस्थितियाँ, 1857 का स्वतंत्रता संग्राम एवं हिंदी नवजागरण	114
2.	हिंदी (खड़ी बोली) गद्य का उद्भव व नवजागरण	121
3.	भारतेन्दु युग एवं भारतेन्दु मंडल के साहित्यकार	124
4.	भारतेन्दु युग में गद्य की विविध विधाओं का उद्भव	131

क्र.सं.	अध्याय का नाम	पृष्ठ संख्या
अध्याय-7 हिंदी साहित्य-आधुनिककाल काव्य युग		**133-186**
1.	द्विवेदी युग- काव्य का विकास, महावीर प्रसाद द्विवेदी और सरस्वती की भूमिका	133
2.	छायावाद- पृष्ठभूमि, प्रवृत्तियाँ, छायावादी काव्य का विकास एवं राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा	143
3.	छायावादोत्तर काव्य	153
4.	प्रगतिवाद- काव्य का विकास	161
5.	प्रयोगवाद- काव्य का विकास	166
6.	नई कविता	177
7.	साठोत्तरी कविता	181
अध्याय-8 विविध गद्य विधाओं का विकास एवं रचना व रचनाकार		**187-289**
1.	नाटक -प्रमुख रचनाकार एवं उनकी रचनाएँ	193
2.	निबंध विधा का विकास, प्रमुख रचनाकार एवं उनकी रचनाएँ	205
3.	कहानी- प्रमुख रचनाकार एवं उनकी रचनाएँ	215
4.	उपन्यास- प्रमुख रचनाकार एवं उनकी रचनाएँ	244
5.	एकांकी- प्रमुख रचनाकार एवं रचनाएँ	268
6.	आत्मकथा- प्रमुख रचनाकार एवं उनकी रचनाएँ	269
7.	जीवनी-प्रमुख रचनाकार एवं रचनाएँ	271
8.	संस्मरण एवं रेखाचित्र	272
9.	रिपोर्ताज एवं डायरी	275
10.	यात्रा संस्मरण - प्रमुख रचनाकार एवं उनकी रचनाएँ	276
11.	आलोचना- प्रमुख आलोचक एवं उनकी रचनाएँ	278
अध्याय-9. पत्रकारिता एवं सम्मान		**290-298**
1.	हिंदी की साहित्यिक पत्रकारिता: परंपरा एवं वैशिष्ट्य	290
2.	पुरस्कार एवं सम्मान	293
अध्याय-10. हिंदी साहित्य विविध तथ्य		**299-304**
1.	हिंदी साहित्य-शब्दावली	299
2.	हिंदी साहित्य-महत्त्वपूर्ण कथन	300
3.	हिंदी साहित्य-विविध तथ्य	301

प्राक्कथन

प्रिय विद्यार्थियों, सहायक आचार्य के द्वितीय पेपर, स्कूल व्याख्याता हिंदी के स्नातक स्तर एवं वरिष्ठ अध्यापक हिंदी के स्नातक स्तर के सिलेबस के आधार पर यह पुस्तक हिंदी साहित्य का सरल एवं सुबोध इतिहास रची गई है। इसमें संपूर्ण हिंदी साहित्य, भाषा, लिपि एवं बोलियों का वर्णन है। हमारा सुझाव है कि इस पूरी पुस्तक को पढ़ना एक हिंदी साहित्य के विद्यार्थी के लिए उपयोगी ही रहेगा तथापि उक्त परीक्षाओं के अभ्यर्थी सिलेबस के आधार पर संबंधित अध्यायों का अध्ययन कर अपनी तैयारी को बेहतर बना सकते हैं। इस पुस्तक के लेखन में हमने प्रामाणिक पुस्तकों- आचार्य रामचंद्र शुक्ल का हिंदी साहित्य का इतिहास, डॉ. नगेन्द्र का हिंदी साहित्य का इतिहास, डॉ. बच्चन सिंह का हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी का हिंदी साहित्य का आदिकाल व हिंदी साहित्य: उद्भव एवं विकास, डॉ. रामकुमार वर्मा का हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, डॉ. रामचंद्र तिवारी का गद्य साहित्य का इतिहास, रामस्वरूप चतुर्वेदी का हिंदी साहित्य का संवेदनात्मक इतिहास आदि प्रामाणिक पुस्तकों को आधार बनाया है तथा आरपीएससी के पुराने हिंदी पेपर्स के स्तर के आधार पर इस पुस्तक को तैयार किया गया है। कड़ी मेहनत एवं खोजपूर्ण तथ्यों के समग्र-संकलित होने से यह पुस्तक अत्यंत ही उपयोगी सिद्ध होगी, ऐसा हमें पूर्ण विश्वास है। साथ ही यह पुस्तक उक्त परीक्षाओं के अलावा भी अन्य हिंदी की परीक्षाओं के लिए समान रूप से उपयोगी है। मैं आपके उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक कामना करता हूँ। -**कैलाश नागौरी**, सरसा पाठशाला

(वॉट्सऐप - 9660669988)

1 अध्याय

हिंदी साहित्य-इतिहास लेखन

1. इतिहास लेखन की परंपरा एवं विधियाँ

❐ साहित्य का इतिहास-

- इतिहास शब्द **इति + हास** से बना है जिसका अर्थ है- **ऐसा ही था** अर्थात् बीते समय में यह वास्तविक घटनाएँ हुई थी। इतिहास एक मानवीय विधा है। इसमें प्रमाणिक व वास्तविक घटनाओं का अध्ययन किया जाता है। साहित्य और समाज का घनिष्ठ संबंध है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने कहा है कि **'प्रत्येक देश का साहित्य वहाँ की जनता की चित्तवृत्तियों का संचित प्रतिबिम्ब होता है।'**
- साहित्य के इतिहास लेखन का मूल उद्देश्य साहित्य की उपलब्धियों को जनता तक पहुँचाना है। साहित्य की गाथा को एवं उसकी मूल प्रवृत्तियों का सरल वर्णन करना इतिहास का प्रयोजन है।
- आदि से अंत तक जनता की चित्तवृत्तियों की परम्परा को परखते हुए साहित्य-परम्परा के साथ सामंजस्य दिखाना ही साहित्य का इतिहास कहलाता है।
- साहित्येतिहास शब्द का सबसे पहले प्रयोग वाल्टेयर ने 18वीं सदी में किया था। इसके बाद हिगेल आदि विद्वानों ने इस शब्द का प्रयोग किया है।

❐ इतिहास की परिभाषा-

(1) गणपतिचंद्र गुप्त के अनुसार- अतीत के किसी भी तथ्य, तत्व या प्रवृत्ति के वर्णन, विवरण, विवेचन, विश्लेषण को, जो कि काल विशेष या कालक्रम की दृष्टि से किया गया हो, इतिहास कहलाता है।

(2) हीगेल के अनुसार- इतिहास केवल घटनाओं का अन्वेषण तथा संकलन मात्र नहीं है, अपितु उसके भीतर कार्य-कारण संबंध विद्यमान है।

(3) गोविंदचंद पांडे के अनुसार- इतिहास एक ऐसा ज्ञानमय अनुशासन है जिसके माध्यम से किसी देश की सभ्यता और संस्कृति को देखा, परखा, समझा जाता है।

❐ इतिहास के स्रोत-

- इतिहास सदैव साक्ष्यों के आधार पर ही लिखा जाता है। ग्रंथ, फुटकल रचनाएँ, कविताएँ, विभिन्न विद्वानों के इतिहास ग्रंथ आदि साक्ष्य के रूप में होते हैं। हिन्दी भाषा की शुरुआत सन् 933 ई. से होती है, लेकिन हिन्दी साहित्य का इतिहास लेखन का कार्य 900 साल बाद प्रारम्भ हुआ। हिंदी साहित्य का इतिहास लिखने का सर्वप्रथम सफल प्रयास **गर्सा दा तासी** ने ही किया है। गर्सा दा तासी ने फ्रेंच भाषा में **'इस्तवार द ला लितरेत्युर ऐन्दुई ऐन्दुस्तानी'** नाम से लिखा है। इस बीच कुछ ऐतिहासिक ग्रंथ जरूर लिखे गए, लेकिन उनमें भी कमियाँ है, तथापि इनमें साहित्य के इतिहास के लक्षण देखे जा सकते हैं-

(1) **गोकुलनाथ-**

(अ) चौरासी वैष्णवों की वार्ता (1568 ई.) - इसमें वल्लभाचार्य एवं उनके शिष्यों का जीवन चरित है। इससे वल्लभ सम्प्रदाय के बारे में प्रयाप्त जानकारी मिलती है।

(ब) दो सो बावन वैष्णवों की वार्ता (1568 ई.)- इसमें विट्ठलाचार्य एवं उनके शिष्यों का वर्णन है। गोकुलनाथ गोस्वामी विट्ठलाचार्य जी के पुत्र थे। अपने पिताश्री और दादाश्री के शिष्यों का वर्णन इन ग्रंथों में किया है। डॉ. धीरेन्द्र वर्मा के अनुसार यह दोनों ग्रंथ दो अलग-अलग लेखकों द्वारा लिखे गए हैं।

(2) **मातादीन मिश्र- कवित्त-रत्नाकर (1866 ई.)**

इसमें **20 कवियों** की कविताएँ संग्रहित है, जिससे तत्कालीन प्रवृत्तियों के बारे में जानकारी मिलती है।

(3) **सूदन -कविनामावली (1733 ई.) -**

इसमें कवियों का सामान्य परिचय दिया गया है। इसमें सुदन ने दस कवित्त छंदों में कवियों के नाम लेकर उनकी वंदना की है।

(4) **यदुनाथ -वल्लभदिग्विजय**

(5) **भिखारीदास-काव्य-निर्णय**

रीतिकालीन कवि भिखारीदास ने इस ग्रंथ में काव्यांग परिचय के साथ अनेक कवियों का संक्षिप्त परिचय भी दिया है। इसमें 16 कवित्त और 17 दोहे है।

(6) **बाबा बेनीमाधवदास-मूल गोसांई चरित (1630 ई.)**

इसमें तुलसीदास जी का जीवन परिचय चौपाई, दोहा आदि छंदों में दिया गया है।

(7) **नाभादास -भक्तमाल (1586 ई.)-**
नाभादास जी ने यह ग्रंथ भक्ति के प्रचार के लिए लिखा था। इसमें 200 भक्त कवियों का जीवन परिचय 108 छप्पय छंदों में दिया गया है। इस ग्रंथ का उद्देश्य भक्त कवियों का प्रचार करना था।

(8) **ध्रुवदास -भक्तनामावली (1621 ई.)**
इसमें 116 भक्त कवियों का संक्षिप्त जीवन-परिचय दिया गया है। इसके अंतिम कवि नाभादास जी है।

(9) **तुलसी हरिराय -कविमाला (1655 ई.)**
इसकी रचना हरिराय के पुत्र तुलसीराम ने रचना की थी। इसमें 75 कवियों का जीवन परिचय है। इन कवियों का कविताकाल विक्रम संवत् 1500 से 1700 है।

(10) **कालीदास त्रिवेदी-कालीदास हजारा (1718 ई.)**
इसमें 212 कवियों की एक हजार कविताओं का संग्रह है। इनका कविताकाल विक्रम संवत् 1480 से 1575 तक है। ठाकुर शिवसिंह ने इसी ग्रंथ के आधार पर शिवसिंह सरोज ग्रंथ लिखा है।

(11) **बलदेव - सत्कवि गिरा विलास (1746 ई.)**
इसमें कुल 17 कवियों की कविताएँ दी गई है, जिनमें केशव, चिंतामणि, मतिराम आदि प्रमुख है।

(12) **सुब्बासिंह - विद्वान् मोद तरंगिणी (1817 ई.)**
इसमें 45 कवियों का काव्य-संग्रह है, जिसमें वियोग वर्णन के काव्य संकलित है।

(13) **कृष्णानन्द व्यासदेव-राग कल्पद्रुम (1843 ई.)**
इसमें लगभग 200 कृष्णभक्त कवियों का जीवन चरित है। यह ग्रंथ राजा राधाकांतदेव के संस्कृत ग्रंथ शब्दकल्पद्रुम के आधार पर बना था। राग सागरोद्भव राग कल्पद्रुम ग्रंथ की योजना सात सर्गों में लिखने की थी, लेकिन इसके तीन भाग ही प्राप्य है।

(14) **ठाकुरप्रसाद त्रिपाठी- रस चंद्रोदय (1863 ई.)**
इसमें बुंदेलखंड के 242 कवियों के काव्य संकलित है।

(15) **हरिश्चन्द्र - सुन्दी तिलक (1869 ई.)**
इसमें 69 कवियों के कवित्त-सवैयों का संग्रह है।

(16) मुंशी देवीप्रसाद-**कविरत्नमाला (1911 ई.)**
इसमें राजपुताने के 108 कवियों की कविताएँ जीवनी सहित संकलित है।

(17) **लाला भगवानादीन-सूक्ति सरोवर (1922 ई.)**
इसमें ब्रजभाषा के अनेक कवियों की साहित्यिक विषयों पर सूक्तियाँ संकलित है।

(18) **महेश दत्त-काव्य-संग्रह (1875 ई.)**

(19) **सरदार कवि-शृंगार-संग्रह (1848 ई.)**
इसमें 125 कवियों के उद्धरण दिए गए हैं। इसमें काव्य के विविध अंगों का वर्णन है।

(20) **ब्रिग्स- गोरखनाथ एंड दी कनफटा योगीज**

(21) **बेसकट-कबीर एंड दा कबीर पंथ**

(22) **अधम-संतबाणी संग्रह (1915 ई.)**
इसमें 24 संतों का जीवन-चरित् सहित काव्य का वर्णन है।

(23) **कर्नल जेम्स टॉड-एनाल्स एंड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान (1829 ई.)** - इसमें राजस्थान के चारण कवियों एवं काशी नागरी प्रचारिणी सभा की खोज में अज्ञात कवियों एवं लेखकों का परिचय मिलता है।

(24) **गुरु अर्जुन देव-श्री गुरु ग्रंथ साहब (1604 ई.)**

(25) **भाषा काव्य संग्रह-श्री महेशदत्त शुक्ल**- इसमें कुछ प्राचीन कवियों की रचनाएँ संग्रहित हैं। उन्हीं कवियों का परिचय भी दिया गया है। यह ग्रंथ नवलकिशोर प्रेस लखनऊ से 1863 ई. में प्रकाशित हुआ।

हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन की प्रमुख पाँच विधियाँ

(1) वर्णानुक्रम पद्धति- इस पद्धति में कवियों के नाम के **वर्णमाला अक्षर** (अल्फाबेट) के क्रमानुसार कवियों या लेखकों का वर्णन किया जाता है। इस पद्धति को गर्सा द तासी और शिवसिंह सेंगर ने अपनाकर हिन्दी साहित्य का इतिहास लिखा था। इस पद्धति को दोषपूर्ण माना जाता है, क्योंकि इसमें कवियों, लेखकों, कालखंड आदि का स्वरूप का निर्धारण नहीं होता है।

(2) कालक्रमानुक्रम पद्धति- इस पद्धति में कवियों का वर्णन उसके **जन्मवर्ष** के अनुसार किया जाता है। इस पद्धति को जार्ज ग्रियर्सन और मिश्र बंधुओं ने अपनाकर हिन्दी साहित्य का इतिहास लिखा है। इसका सबसे बड़ा दोष यह है कि काव्य युग की प्रवृत्तियों का पता नहीं चलता है। जैसे- हमारी पुस्तक कविमाला में कवियों का जीवन-परिचय जन्मवर्ष के अनुसार दिया गया है।

(3) विधेयवादी पद्धति - इस पद्धति के जन्मदाता फ्रांस के विद्वान तेन माने जाते हैं। यह सर्वाधिक उपयुक्त पद्धति है। इस पद्धति को तीन भागों में बांटा जाता है-1. जाति 2. वातावरण और 3. क्षण। **आचार्य रामचन्द्र शुक्ल** ने इसी पद्धति के आधार पर हिन्दी साहित्य का इतिहास लिखा है। इसलिए ही उनके इतिहास ग्रंथ को सच्चे अर्थों में हिन्दी साहित्य का प्रथम इतिहास ग्रंथ कहा जाता है।

(4) वैज्ञानिक पद्धति -इस पद्धति में तथ्यों की जाँच कर विश्लेषण किया जाता है, फिर निष्कर्ष पर पहुँचकर इतिहास लिखा जाता है। डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त ने इसी पद्धति के आधार पर हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास लिखा है।

(5) समाजवादी पद्धति - यह पद्धति कॉर्ल मार्क्स के सिद्धांत पर आधारित है। यह पद्धति इतनी लोकप्रिय नहीं हुई, क्योंकि यह समाज को दो वर्गों शोषक व शोषित में बाँटती है।

2. प्रमुख इतिहास ग्रंथ एवं इतिहासकार

- हिंदी साहित्य का इतिहास लिखने का कार्य अनेक विद्वानों द्वारा हुआ है। इनमें से कुछ विद्वानों ने विशेष रूप से हिंदी साहित्य का इतिहास ही लिखा है तो कुछ विद्वानों ने साहित्य-परिचय के लिए ग्रंथ लिखे हैं, लेकिन उनमें इतिहास के लक्षण स्वत: ही आ गए है। हिंदी साहित्य का इतिहास लिखने का पहला प्रयास विद्वान गर्सा दा तासी के द्वारा हुआ है। फ्रेंच विद्वान् गर्सा दा तासी ने फ्रेंच भाषा में हिंदी साहित्य का इतिहास **इस्तवार द ला लिटरेच्युर ऐन्दुई ऐन्दुस्तानी** के नाम से लिखा है। इसके बाद हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास ग्रंथ ठाकुर शिवसिंह का शिवसिंह सरोज माना जाता है जो हिंदी भाषा में लिखा गया है। इसके बाद तीसरा महत्त्वपूर्ण इतिहास ग्रंथ जार्ज अब्राहिम ग्रियर्सन द्वारा लिखित **दा मॉडर्न वर्नाकुल्यर लिटरेचर ऑफ नॉर्थन हिन्दुस्तान** माना जाता है। इसके बाद आचार्य रामचंद्र शुक्ल का **हिंदी साहित्य का इतिहास** प्रमुख ग्रंथ माना जाता है। सच्चे अर्थों में हिंदी साहित्य का पहला इतिहास ग्रंथ आचार्य रामचंद्र शुक्ल का हिंदी साहित्य का इतिहास ही माना जाता है। यहाँ हम प्रारंभ से लेकर आधुनिक काल तक हिंदी साहित्य के संबंध में लिखे गए समस्त लोकप्रिय इतिहास ग्रंथों का परिचय प्राप्त करेंगे-

(1) इस्तवार द ला लिटरेच्युर ऐन्दुई ऐन्दुस्तानी (लेखक- गर्सा दा तासी)

- फ्रेंच विद्वान गर्सा दा तासी के इतिहास ग्रंथ से हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन की परम्परा शुरू होती है
- गर्सा दा तासी के इतिहास ग्रंथ का नाम इस्तवार द ला लितरेत्युर ऐन्दुई ऐन्दुस्तानी है, जिसमें ऐन्दुई का अर्थ हिन्दवी (हिंदी) और ऐन्दुस्तानी का अर्थ हिंदुस्तानी (उर्दू भाषा) है।
- **इस्तवार द ला लिटरेच्युर ऐन्दुई ऐन्दुस्तानी** हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन का पहला ग्रंथ है, जिसकी **भाषा फ्रेंच** है।
- यह **पाँच भागों** में आयरलैण्ड से प्रकाशित हुआ। इसका प्रथम भाग **1839 ई.**एवं दूसरा भाग **1847 ई.** में प्रकाशित हुआ। शेष तीन भाग सन् 1870-71 में प्रकाशित हुए।
- इसमें कुल **738 कवियों** का वर्णन है, जिसमें हिन्दी के **72 कवि** है, शेष उर्दू के **666 कवि** हैं।
- इस ग्रंथ में प्रथम **कवि अंगद** एवं अंतिम **कवि हेमंत पंत** है।
- इस ग्रंथ में गर्सा द तासी ने कवियों की जीवनी एवं उनके द्वारा रचित रचनाओं की जानकारी दी है। उनका प्रयास प्रशंसनीय रहा, क्योंकि यह हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन में प्रथम प्रयास था। इस ग्रंथ को आ. शुक्ल ने "**वृत्त संग्रह**" कहकर पुकारा है।
- इस ग्रंथ में कवियों का वर्णन **वर्णानुक्रम** के अनुसार किया गया है, जिससे कवियों के युग बदल गये थे। इस प्रकार कुछ न्यूनताओं की वजह से यह हिन्दी साहित्य का इतिहास नहीं कहा जा सकता।
- इस ग्रंथ का उर्दू अनुवाद करीमुद्दीन ने "**तज किराई शुअरा हिन्दी**" के नाम से 1848 ई. में किया और इसका हिन्दी अनुवाद 1952 ई. में डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय ने "**हिन्दुई साहित्य का इतिहास**" नाम से किया।

(2) भाषा काव्य संग्रह - महेशदत्त शुक्ल

- डॉ. रामकुमार वर्मा के अनुसार हिंदी साहित्य के इतिहास का दूसरा ग्रंथ हिंदी भाषा में महेशदत्त शुक्ल के द्वारा लिखा गया है।
- इस ग्रंथ का प्रकाशन नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ से 1873 ई. में हुआ।
- इसमें लेखक ने पहले प्राचीन कविताएँ दी है, फिर कवियों का जीवन-चरित्र दिया है। अंत में कठिन शब्दों का शब्दकोश भी दिया है।

(3) शिवसिंह सरोज - (ठाकुर शिवसिंह) -

- हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन की गर्सा द तासी की परम्परा को मध्यप्रदेश के राजा **शिवसिंह सेंगर** ने आगे बढ़ाया और **शिवसिंह सरोज** के नाम से हिन्दी साहित्य का इतिहास लिखा।
- यह हिन्दी साहित्य के इतिहास का दूसरा ग्रंथ है एवं किसी **भारतीय विद्वान** द्वारा लिखा प्रथम ग्रंथ है।
- साथ ही यह **हिन्दी भाषा** में लिखा गया प्रथम ग्रंथ है।
- इस ग्रंथ का प्रकाशन **सन् 1883** में **नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ** से हुआ।
- राजा शिवसिंह सेंगर ने भी तासी की तरह **वर्णानुक्रम पद्धति** को अपनाया।
- इसमें **1003 कवियों** का विवरण दिया गया है।
- इस ग्रंथ में कवियों का जीवन चरित्र, उनकी रचनाएँ, रचनाकाल आदि विवरण दिए हैं।
- इसी ग्रंथ में ठाकुर शिवसिंह ने **पुष्पदंत** को हिन्दी का प्रथम कवि माना है।
- यह ग्रंथ परवृत्ति इतिहासकारों के लिए आधार ग्रंथ रहा है, तथापि इसमें न्यूनताएँ हैं।

(4) द मॉडर्न वर्नाक्यूलर लिटरेचर ऑफ नॉर्थन हिन्दुस्तान- (जार्ज अब्राहिम ग्रियर्सन)

- हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन का तीसरा ग्रंथ जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन ने **दा मॉडर्न वर्नाकुल्यर लिटरेचर ऑफ नॉर्थन हिन्दुस्तान** के नाम से लिखा।
- इसका **प्रकाशन 1888 ई.** में रोयल सोसायटी ऑफ बंगाल के विशेषांक के रूप में प्रकाशित हुआ।
- यह ग्रंथ शिवसिंह सरोज ग्रंथ को आधार बनाकर लिखा गया है।

- यह ग्रंथ ग्रियर्सन ने **कालक्रमानुक्रम पद्धति** से लिखा था। इस ग्रंथ में ग्रियर्सन ने साहित्यिक प्रवृत्तियों पर भी प्रकाश डाला है और पहली बार इस ग्रंथ में काल विभाजन का प्रयास किया गया।
- इसमें **952 कवियों** का जीवन-चरित् दिया गया है।
- आ. शुक्ल ने इसे बड़ा वृत्त संग्रह कहकर प्रकारा है।
- यह **अंग्रेजी** में लिखा गया था, इसका हिन्दी अनुवाद सन् 1957 में **डॉ. किशोरीलाल गुप्त** ने **''हिन्दी साहित्य का प्रथम इतिहास''** नाम से किया।
- इस ग्रंथ से पूर्व ग्रियर्सन लैंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया लिख चुके थे। ग्रियर्सन ने पृथ्वीराज रासो के 5000 छंदों का अंग्रेजी में अनुवाद भी किया था। जार्ज ग्रियर्सन ने काल विभाजन करते हुए हिंदी साहित्य को 12 भागों में बांटा है।

(5) हिंदी कोविद रत्नमाला - बाबू श्यामसुंदर दास बी.ए.

- बाबू श्यामसुंदर दास द्वारा हिंदी कोविद रत्नमाला ग्रंथ दो भागों में लिखा गया था।
- इसका प्रथम भाग 1909 ई. में और दूसरा भाग 1914 ई. में प्रकाशित हुआ।
- इसमें 80 आधुनिक लेखकों का जीवन परिचय दिया गया है।
- इसे इतिहास ग्रंथ नहीं माना जाता है, लेकिन फिर भी साहित्यिक महत्व के लिए उपयोगी माना जाता है।

(6) मिश्र बंधु विनोद - (मिश्र बंधु)-

- गर्सा द तासी, शिवसिंह सेंगर व ग्रियर्सन के बाद इतिहास लेखन का सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य **मिश्र बंधुओं** ने किया था। मिश्र बंधुओं ने हिन्दी साहित्य का इतिहास **मिश्र बंधु विनोद** नाम से लिखा। मिश्र बंधुओं ने स्वयं कहा है कि पहले हम इस ग्रंथ का नाम हिन्दी साहित्य का इतिहास रखने वाले थे, किंतु इतिहास की गंभीरता पर विचार-विमर्श करने के बाद यह ज्ञात हुआ कि साहित्य का इतिहास लिखने की क्षमता हम में नहीं है।
- मिश्र बंधु तीन भाई थे- **गणेश बिहारी मिश्र, श्याम बिहारी मिश्र और शुकदेव बिहारी मिश्र**। ये तीनों भाई मिलकर रचनाएँ लिखते थे। लगभग सभी रचनाएँ तीनों ने मिलकर ही लिखी है। इसलिए यह तीनों भाई मिश्र बंधु के नाम से प्रसिद्ध थे।
- मिश्र बंधु कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। माना जाता है कि ज्योतिष ग्रंथ **मुहूर्त्त चिंतामणी** के रचयिता **चिंतामणी मिश्र** इनके पूर्वज थे। इनके पूर्वज हरदोई (उ.प्र.) के रहने वाले थे, बाद में लखनऊ के पास इंटोजा में बस गए।
- गणेश बिहारी मिश्र का जन्म 1865 ई. में हुआ था। गणेश बिहारी मिश्र लखनऊ डिस्ट्रिक बॉर्ड के सदस्य और उपाध्यक्ष भी रहे थे।
- श्याम बिहारी मिश्र का जन्म 1873 ई. को हुआ था। इनकी शिक्षा स्नोतकोत्तर तक हुई। श्याम बिहारी मिश्र डिप्टी कलेक्टर व डिप्टी कमिश्नर जैसे प्रशासकीय पदों पर भी नियुक्त हुए। श्याम बिहारी मिश्र का पहला लेख **सरस्वती पत्रिका** में **हमीर हठ** विषयक समालोचना का छपा था।
- रायबहादूर शुकदेव बिहारी मिश्र का जन्म 1878 ई. को हुआ। इन्होंने स्नातक व वकालत की शिक्षा प्राप्त की, बाद में सब जज भी बने थे।
- तीनों भाई खोजी व मेहनती थे। तीनों ने मिलकर हिन्दी साहित्य का इतिहास **मिश्र बंधु विनोद** के नाम से लिखा, जो बहुत लोकप्रिय हुआ। स्वयं आ. रामचन्द्र शुक्ल ने भी मिश्र बंधु विनोद ग्रंथ से सहायता लेकर हिन्दी साहित्य का इतिहास लिखा था।

मिश्र बंधु विनोद- मिश्र बंधु

- यह ग्रंथ चार भागों में है, प्रथम तीन भाग **1913** ई. में एवं चौथा भाग **1934 ई.** में प्रकाशित हुआ।
- इसमें लगभग 5000 (वास्तव में 4591) कवियों का वर्णन दिया गया है।
- हिन्दी में सबसे पहले **इतिवृत्तात्मक शैली** में साहित्य का इतिहास मिश्र बंधुओं ने ही लिखा है।
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने मिश्र बंधु विनोद को **बड़ा भारी वृत्त संग्रह** और मिश्र बंधुओं को **परिश्रमी संकलनकर्त्ता** कहा है।

हिंदी नवरत्न - मिश्र बंधुओं का दूसरा लोकप्रिय ग्रंथ

- मिश्र बंधुओं की दूसरी महत्त्वपूर्ण रचना **हिन्दी नवरत्न** है।
- हिन्दी नवरत्न रचना **सन् 1910** में प्रकाशित हुई।
- इसमें मिश्र बंधुओं ने हिन्दी के **सर्वश्रेष्ठ नौ** (वास्तव में दस) कवियों क्रमशः तुलसीदास, सूरदास, देव, बिहारी, त्रिपाठी बंधु (भूषण और मतिराम), केशव, कबीर, चंदबरदाई और भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को क्रमशः बृहद् त्रयी, मध्यत्रयी और लघुत्रयी में श्रेणीबद्ध कर उनके जीवनी के साथ-साथ काव्य का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया।
- यह पुस्तक तुलनात्मक आलोचना की प्रथम पुस्तक मानी जाती है। इसमें मिश्र बंधुओं ने नौ कवियों के तुलनात्मक अध्ययन में **देव** को बिहारी से सर्वश्रेष्ठ कवि घोषित किया, जो आगे चलकर विवाद का विषय बना।
- **मिश्र बंधुओं की अन्य रचनाएँ**- (1) लवकुश चरित् (2) भारत विनय (पद्य) (3) बूँदी वारिश (पद्य) (4) भारतवर्ष का इतिहास (5) पुष्पांजलि (गद्य-पद्य) (6) भूषण ग्रंथावली (7) देव ग्रंथावली (8) सूर सुधा और (9) नेत्रोन्मीलन (नाटक)

(7) कविता कौमुदी- रामनरेश त्रिपाठी

- कविता कौमुदी ग्रंथ की रचना रामनरेश त्रिपाठी ने की।
- कविता कौमुदी का प्रथम भाग-1917 ई. में और द्वितीय भाग-1926 ई. में प्रकाशित हुआ।
- इसके प्रथम भाग में भारतेन्दु हरिश्चंद्र से पहले तक के 89 कवियों का जीवन-चरित् दिया गया है।